



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	13-5-23	2	1-5

खेतीबाड़ी

अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र की तरफ से एचएयू में दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला शुरू

एडब्ल्यूडी विधि धान में पानी बचाने की प्रभावी तकनीक : डॉ. बलवान

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। धान की फसल में पानी की बचत के लिए सीधे बिजाई जैसी ही एक और नई विधि आई है एडब्ल्यूडी अर्थात् अल्टरनेटिव वेटिंग एवं ड्राइंग (बारी-बारी गीला व सूखा करना)। एक यह सिंचाई प्रबंधन प्रणाली है, जिसमें एक बार खेत में बाढ़ जैसा पानी भरा जाता है और फिर मिट्टी को नमी के न्यूनतम स्तर तक सूखने देते हैं।

इस विधि के प्रयोग से धान के खेत से निकलने वाली हानिकारक मिथेन गैस का उत्सर्जन भी कम होता है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि एडब्ल्यूडी पानी बचाने की एक प्रभावी तकनीक है, जिसे अपनाकर किसान अपने



हिसार में वैज्ञानिकों को एडब्ल्यूडी विधि के बारे में जानकारी देते विशेषज्ञ। संवाद

धान के खेतों में पानी की खपत को कम कर सकते हैं। इससे उपज भी प्रभावित नहीं होती। एडब्ल्यूडी तकनीक में खेत में लगे पानी के सूख जाने के कुछ दिनों बाद सिंचाई करते हैं। इससे खेत बारी-बारी

जलमग्न व सूखे में तब्दील होता रहता है। इस नई विधि की जानकारी चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र

(आईएसएआरसी) वाराणसी द्वारा एडब्ल्यूडी विधि पर आयोजित दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला के पहले दिन दी गई। कार्यशाला में जींद व फतेहाबाद के 30 किसानों ने भी हिस्सा लिया। उन्होंने

प्रतिभागियों से आत्मान किया कि वे किसानों के बीच जाकर कार्यशाला में सीखी गई तकनीकों व जानकारियों का आदान-प्रदान करें, जिससे कि किसान नवाचारों को समझकर नई विधि अपना सकें।

विश्वविद्यालय के साइना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने संचालित परियोजनाओं के विषय के प्रतिभागियों को अवगत कराया। आईसीए से आए वैज्ञानिक डॉ. विक्रम पाटिल ने तकनीकी सत्र में कोर क्रेडिट ऑफ सेंटिंग राइस एमिशन परियोजना के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ. विपिन अहलावत, डॉ. आशीष श्रीवास्तव, डॉ. प्रलवदेव, डॉ. जसवीर, डॉ. सुरेश कुमार आदि मौजूद रहे।



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	15-5-23	2	6-7

गुलाबी सुंडी को रोकना है तो पुरानी फसल की बंछटी हटाएं

हकृवि के विशेषज्ञ ने बताए गुलाबी सुंडी की रोकथाम के उपाय



कपास की फसल में लगा गुलाबी सुंडी कीट।

हिसार। अगर कपास की फसल को गुलाबी सुंडी से बचाना है तो सबसे पहले खेत के आसपास पड़े कपास की बंछटियों को हटा दें। पुराने अवशेष के अधखिले टिंडों में सुप्त अवस्था में पड़ी सुंडियां नई फसल में आ जाती हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि 15 मई तक कपास की बिजाई कर लेने से कीट एवं रोग का फसल में कम असर होता है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के कपास विशेषज्ञ डॉ. अनिल जाखड़ बताते हैं कि गुलाबी सुंडी का सबसे पहला केस वर्ष 2018 में जींद जिले के उचाना क्षेत्र के गांव पालवा में आया था। गुलाबी सुंडी का प्रकोप बिजाई के 40 से 45 दिन बाद दिखने लगती है। जिन खेतों में पिछले साल की कपास की बंछटियां होती हैं, उनमें इसका असर अधिक दिखता है। क्योंकि अवशेष फसल में जो अधखिले टिंडे रह जाते हैं, उसके बिनौले में गुलाबी सुंडी के लार्वा (शिशु) बचे रहते हैं। इसलिए अगली फसल में गुलाबी सुंडी का आक्रमण कम हो, इसके लिए जरूरी है पिछले साल की बंछटियों को हटा दें।

गुलाबी सुंडी की वजह से कपास के फूल अधखिले रह जाते हैं। इसकी पहचान के लिए खेत में फोरोमैन ट्रैप लगाएं या हरे टिंडे को फाड़कर देखें। इसके अलावा अगर जून में हल्की-हल्की बारिश व अधिक गर्मी हो तो जुलाई-अगस्त में कपास की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ता है। इसका प्रकोप बढ़ने पर पौधे काले पड़ने लगते हैं। ऐसी स्थिति में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। व्यूरो

■ **उर्वरकों का रखें ध्यान...** अमेरिकन कपास में 35 किलोग्राम नाइट्रोजन व 12 किलोग्राम फास्फोरस डालें। संकर कपास व बीटी कपास में नाइट्रोजन 70 किलोग्राम, फास्फोरस 24 किलोग्राम तथा पोटाशियम 24 किलोग्राम डालें। देसी कपास में सिर्फ नाइट्रोजन 20 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से डालें।

फसल प्रबंधन करें तो कम होगा नुकसान

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि खरीफ की नकदी फसलों में कपास का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रदेश में लगभग 6.3 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में कपास की बिजाई होती है। किसानों को कपास की फसल के लिए प्रबंधन सबसे अहम है। मतलब खेत की तैयारी बिजाई से पहले ही शुरू कर दें। केवल उन्हीं बीज का प्रयोग करें, जिसे विश्वविद्यालय ने संस्तुति दी है। बीमारी या कीटों के प्रकोप होने की स्थिति में विश्वविद्यालय के कृषि विशेषज्ञों अथवा कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञों से जानकारी लें।

■ **अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा** ने बताया कि कपास की बिजाई के लिए मई का पूरा महीना सर्वोत्तम है। बीज व कीटनाशकों की सूची विश्वविद्यालय हर साल जारी करता है, जिसे अपने क्षेत्र के कृषि विभाग के अफसरों से प्राप्त कर लें।

कपास की उन्नतशील किस्में

- **बीटी कपास की संकर किस्में :** एसीएच 945-2, एसीएच 955-2, आरसीएच 938-2, आरसीएच 951, आरसीएच 846, आरसीएच 926, एमएच 5403, एमएच 5408, केसीएच 307, केसीएच 9323, केसीएच 9333, सी 9313, सी 352
- **नॉन बीटी अमरीकन कपास की उन्नत किस्में :** एच 1098 संशोधित व एच 1300
- **देसी कपास की उन्नत किस्में :** एचडी 123, एचडी 324 व एचडी 432 व देसी कपास की संकर किस्म : एएएच-1



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन जागरण	13-5-23	2	2-5

खेत जलमग्न व सूखे में तब्दील हो रहा तो धान में पानी बचाने में एडब्ल्यूडी विधि प्रभावी तकनीक

अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र ने आयोजित की दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला

जागरण संबाददाता, हिसार : चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईएसएआरसी) वाराणसी द्वारा एल्टनेटिव वेटिंग एंड ड्राइंग (बारी-बारी गीला व सूखा करना : एडब्ल्यूडी) विधि पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला में जॉर्ज व फतेहाबाद के करीब 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कुलसचिव व विस्तार शिक्षा निदेशक डा. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि वैकल्पिक आर्द्रण-शुष्कन पानी बचाने की एक प्रभावी तकनीक है, जिसे

किसान अपनी उपज को बिना प्रभावित किए धान के खेतों में सिंचाई के पानी के उपयोग को कम कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि एडब्ल्यूडी तकनीक से खेत में लगे पानी के सूख जाने के कुछ दिनों बाद सिंचाई का पानी लगाया जाता है। इसलिए खेत बार-बार जलमग्न व सूखे में तब्दील होता रहता है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वह किसानों के बीच जाकर कार्यशाला में



हकृषि के विस्तार शिक्षा निदेशक डा. बलवान सिंह मंडल प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

तकनीकी सत्र में कोर क्रेडिट आफ सेटिंग राइस एमिशन परियोजना के बारे में बताया

वैज्ञानिक डा. विक्रम पाटिल ने तकनीकी सत्र में कोर क्रेडिट आफ सेटिंग राइस एमिशन परियोजना के बारे में बताया। इसके द्वारा एडब्ल्यूडी तकनीकी को

प्रसारित किया जा रहा है। डा. विपिन अहलावत ने एडब्ल्यूडी तकनीकी की बारीकियों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। डा. अशोक श्रीवास्तव ने वाटर

सीधी बिजाई से पानी व लेबर की होगी बचत

विश्वविद्यालय के ज्वाइंट डायरेक्टर (फसल) डा. सुरेश कुमार ने सीधी बिजाई तकनीकी के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि भविष्य में लेबर और पानी की थिकट समस्या को देखते हुए सीधी बिजाई एक उपयुक्त तकनीकी है, जिसमें पानी और लेबर दोनों की बचत होती है। कार्यशाला में ऑलम और यूएन ओमन संस्थान के विशेषज्ञों ने भी भाग लिया।

मेनेजमेंट व न्यूट्रियंट मेनेजमेंट के बारे में गहनता से जानकारी दी। डा. प्रलवदेव और डा. जसवीर ने एडब्ल्यूडी व वाटर मेनेजमेंट के बारे में विस्तार से बताया।

सीखी गई तकनीकों व जानकारीयों का आदान-प्रदान करें, ताकि किसानों को उन ज्ञानवर्धक जानकारीयों व नवाचारों को समझकर नई विधि अपनाने में आसानी हो सके। दूसरों

को भी इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकें। विवि के साइना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने

संचालित परियोजनाओं के विषय के प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि मूल्य संवर्धन के माध्यम से किसान अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब कृषि	13.5.23	4	6

अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र ने आयोजित की 2 दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला ए.डब्ल्यू.डी. विधि धान में पानी बचाने की प्रभावी तकनीक : डॉ. बलवान

हिसार, 12 मई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आई.एस.ए.आर.सी), वाराणसी द्वारा एल्टर्नेटिव वेटिंग एंड ड्राइंग (बारी-बारी गौला व सुखा करना - ए.डब्ल्यू.डी.) विधि पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जींद व फतेहाबाद के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि वैकल्पिक आर्द्रण - शुष्कन पानी बचाने की एक प्रभावी तकनीक है, जिसे किसान अपनी उपज को बिना प्रभावित किए धान के खेतों में सिंचाई के पानी के उपयोग को कम कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि ए.डब्ल्यू.डी. तकनीक से खेत में लगे पानी के सूख जाने के कुछ दिनों बाद सिंचाई का पानी लगाया जाता है। इसलिए खेत बारी-बारी जलमग्न व सुखे में तब्दील होता रहता है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे किसानों के बीच जाकर कार्यशाला में सीखी गई तकनीकों व



ए.डब्ल्यू.डी. विधि के बारे में जानकारी देते वैज्ञानिक।

जानकारियों का आदान-प्रदान करें।

विश्वविद्यालय के साइना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने संचालित परियोजनाओं के विषय के प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि मूल्य संवर्धन के माध्यम से किसान अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। आईसीक से आए वैज्ञानिक डॉ. विक्रम पाटिल ने तकनीकी सत्र में कोर क्रेडिट ऑफ सेटिंग राइस एमिशन परियोजना के बारे में बताया, जिसके द्वारा ए.डब्ल्यू.डी. तकनीकी को प्रसारित किया जा रहा है।

डॉ. विपिन अहलावत ने

ए.डब्ल्यू.डी. तकनीकी की बारीकियों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने वाटर मैनेजमेंट व न्यूट्रियंट मैनेजमेंट के बारे में गहनता से जानकारी दी। डॉ. प्रलवदेव और डॉ. जसवीर ने एडब्ल्यू.डी व वाटर मैनेजमेंट के बारे में विस्तार से बताया।

विश्वविद्यालय के ज्वाइंट डायरेक्टर (फसल) डॉ. सुरेश कुमार ने सीधी बिजाई तकनीकी के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि भविष्य में लेबर और पानी को विकट समस्या को देखते हुए सीधी बिजाई एक उपयुक्त तकनीकी है, जिसमें पानी और लेबर दोनों की बचत होती है। कार्यशाला में औसत और यू.एन. ओमन संस्थान के विशेषज्ञों ने भी भाग लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	13-5-23	5	1-3

ए.डब्ल्यू.डी. विधि धान में पानी बचाने की एक प्रभावी तकनीक : डॉ. बलवान सिंह

अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र ने आयोजित की दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला



ए.डब्ल्यू.डी. विधि संबंधी जानकारी देते हुए वैज्ञानिक।

हिसार, 12 मई (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केन्द्र (आई.एस.ए.आर.सी), वाराणसी द्वारा एस्टनेटिव वेटिंग एंड ड्राइंग (बारी-बारी गीला व सूखा करना - ए.डब्ल्यू.डी.) विधि पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जॉर्ड व फ्लोहाबार्ड के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि वैकल्पिक आईएन - शुष्कन पानी बचाने की एक प्रभावी तकनीक है, जिसे किसान अपनी उपज को बिना प्रभावित किए धान के खेतों में सिंचाई

के पानी के उपयोग को कम कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि ए.डब्ल्यू.डी. तकनीक से खेत में लगे पानी के सूख जाने के कुछ दिनों बाद सिंचाई का पानी लगाया जाता है। इसलिए खेत बारी-बारी जलमग्न व सूखे में तब्दील होता रहता है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे किसानों के बीच जाकर कार्यशाला में सीखी गई तकनीकों व जानकारियों का आदान-प्रदान करें ताकि किसानों को उन ज्ञानवर्धक जानकारियों व नवाचारों को समझकर नई विधि अपनाने में आसानी हो सके। साथ ही दूसरों को भी इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकें। विश्वविद्यालय के साइना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण)

डॉ. अशोक गोदारा ने संचालित परियोजनाओं के विषय के प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि मूल्य संवर्धन के माध्यम से किसान अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। आईसॉक से आए वैज्ञानिक डॉ. विक्रम पाटिल ने तकनीकी सत्र में कोर केडिट ऑफ सेटिंग राइस एमिशन परियोजना के बारे में बताया, जिसके द्वारा ए.डब्ल्यू.डी. तकनीकी को प्रसारित किया जा रहा है। डॉ. विपिन अहलावत ने ए.डब्ल्यू.डी. तकनीकी की बारीकियों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने वाटर मैनेजमेंट व न्यूट्रियंट मैनेजमेंट के बारे में गहनता से जानकारी दी। डॉ. प्रलवदेव और डॉ. जसवीर ने ए.डब्ल्यू.डी. व वाटर मैनेजमेंट के बारे में विस्तार से बताया। विश्वविद्यालय के ज्वाइंट डायरेक्टर (फसल) डॉ. सुरेश कुमार ने सीधी बिजुई तकनीकी के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि भविष्य में लेबर और पानी की विकट समस्या को देखते हुए सीधी बिजुई एक उपयुक्त तकनीकी है, जिसमें पानी और लेबर दोनों की बचत होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	13-5-23	9	1-4

अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला

एडब्ल्यूडी विधि धान में पानी बचाने की प्रभावी तकनीक

हरिभूमि न्यूज | हिंसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईएसएआरसी), वाराणसी की ओर से एल्टनेटिव वेटिंग एंड ड्राइंग (बारी-बारी गीला व सूखा करना-एडब्ल्यूडी) विधि पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जींद व फतेहाबाद के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान



हिंसार। एडब्ल्यूडी विधि के बारे में जानकारी देते वैज्ञानिक। फोटो: हरिभूमि

सिंह मंडल ने बताया कि वैकल्पिक आर्द्रण-शुष्कन पानी बचाने की एक प्रभावी तकनीक है, जिसे किसान अपनी उपज को बिना प्रभावित किए धान के खेतों में सिंचाई के

पानी के उपयोग को कम कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि एडब्ल्यूडी तकनीक से खेत में लगे पानी के सूख जाने के कुछ दिनों बाद सिंचाई का पानी लगाया जाता है। इसलिए

खेत बारी-बारी जलमग्न व सूखे में तब्दील होता रहता है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे किसानों के बीच जाकर कार्यशाला में सीखी गई तकनीकों व जानकारियों का आदान-प्रदान करें ताकि किसानों को उन ज्ञानवर्धक जानकारियों व नवाचारों को समझकर नई विधि अपनाने में आसानी हो सके। साथ ही दूसरों को भी इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकें। डॉ. प्रलवदेव और डॉ. जसवीर ने एडब्ल्यूडी व वाटर मैनेजमेंट के बारे में विस्तार से बताया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक 21/5/23	14-5-23	6	5-6

पानी बचाने के लिए खेती के तरीके बदलने होंगे : डॉ. शर्मा

हकृषि में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आई.एस.ए.आर.सी), वाराणसी द्वारा अल्टनेटिव वेटिंग एंड ड्राइंग (बारी-बारी गोला व सूखा करना-ए.डब्ल्यू.डी.) विधि पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला शनिवार को संपन्न हो गई। इस दौरान खेती में पानी की बचत करने के उपायों पर चर्चा की गई। कार्यशाला के समापन पर बतौर मुख्य अतिथि अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने कहा कि खेती व जीवन के लिए पानी सबसे अधिक जरूरी है।

पानी के अत्यधिक दोहन के चलते आने वाले समय में पानी बड़े संकट के तौर पर सामने आएगा। इसलिए अभी से कम

पानी में खेती करने का तरीका खोजना होगा। इसीलिए धान की बिजाई विधि में बदलाव की बात वैज्ञानिक कर रहे हैं।

वैकल्पिक आद्रण- शुष्कन विधि भी पानी बचाने का एक प्रभावी तरीका है, जिससे किसान अपनी उपज को बिना प्रभावित किए धान के खेतों में सिंचाई के पानी के उपयोग को कम कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि एडब्ल्यूडी तकनीक से किसान धान की फसल में 25 से 30 प्रतिशत तक पानी बचा सकते हैं।

साइना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने मूल्य संवर्धन के माध्यम से अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त करने व डॉ. विपिन अहलावत ने ए.डब्ल्यू.डी. तकनीक की बारीकियों से प्रतिभागियों को सही तरीके से अवगत कराया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	13.5.23	6	1-2

पानी बचाने के लिए खेती के तौर तरीकों में करना होगा बदलाव

हिसार। अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईएसएआरसी) वाराणसी की तरफ से एचएयू में आयोजित दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला शनिवार को संपन्न हुई। कार्यशाला में खेती में पानी की बचत करने के उपायों पर चर्चा की गई।

कार्यशाला के समापन के अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने कहा कि खेती व जीवन के लिए पानी सबसे अधिक जरूरी है। परंतु अत्यधिक दोहन के चलते आने वाले समय में पानी का संकट हो जाएगा। व्यूरे



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार	14.05.2023		

पानी बचाने के लिए खेती के तौर तरीकों में करना होगा बदलाव- डॉ. जीतराम शर्मा

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आई.एस.ए.आर.सी), बाराणसी द्वारा अल्टनेटिव वेटिंग एंड ड्राइंग (बारी-बारी गीला व सूखा करना - ए.डब्ल्यू.डी.) विधि पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला शनिवार को संपन्न हो गया। इस दौरान खेती में पानी की बचत करने के उपायों पर चर्चा की गई। कार्यशाला के समापन के अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए। डॉ. जीतराम शर्मा ने कहा कि खेती व जीवन के लिए पानी सबसे

अधिक जरूरी है। परंतु अत्यधिक दोहन के चलते आने वाले समय में पानी बड़े संकट के तौर पर सामने आएगी। इसलिए अभी से



कम पानी में खेती करने का तरीका खोजना होगा। इसीलिए धान की बिजाई विधि में बदलाव की बात वैज्ञानिक कर रहे हैं। वैकल्पिक आर्द्रण - शुष्कन विधि भी पानी बचाने का एक

प्रभावी तरीका है, जिससे किसान अपनी उपज को बिना प्रभावित किए धान के खेतों में सिंचाई के पानी के उपयोग को कम कर

सकते हैं। उन्होंने बताया कि ए डब्ल्यू डी तकनीक से किसान धान की फसल में 25 से 30 प्रतिशत तक पानी बचा सकते हैं।

समापन कार्यक्रम को विश्वविद्यालय के माहना नेडवाल

तराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र द्वारा हकूवि में आयोजित दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला संपन्न

कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने मूल्य संवर्धन के माध्यम से अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त करने व डॉ. विपिन अहलावत ने ए.डब्ल्यू.डी. तकनीकों की बारीकियों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। डॉ. जसवीर ने एडब्ल्यूडी व वाटर मैनेजमेंट के बारे में विस्तार से बताया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी प्लस	13.05.2023		

एडब्ल्यू.डी. विधि धान में पानी बचाने की एक प्रभावी तकनीक : डॉ. बलवान सिंह

सिटी प्लस न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र गजगरी द्वारा एल्टर्नेटिव वेटिंग एंड ड्राइंग विधि पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जीट व फ्लोरबार्ड के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कुलसचिव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि वैकल्पिक आर्टन - सूखाने पानी बचाने की एक प्रभावी तकनीक है, जिसे किसान अपनी उपज को बिना प्रभावित किए धान के खेतों में सिंचाई के पानी के उपयोग को कम कर सकते हैं।



उन्होंने प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे किसानों के बीच जाकर कार्यशाला में सीखी गई तकनीकों व जानकारियों का आदान-प्रदान करें ताकि किसानों को उन जानकारीयों

व नवाचारों को सज्जकार नई विधि अपनाने में आसानी हो सके। साथ ही दूसरों को भी इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकें।

विश्वविद्यालय के सड़ना नेव्वाल

कृषि प्रौद्योगिकी परिशोधन एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोयस ने संघलित परिचयनों के विषय के प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि मूल्य संवर्धन के माध्यम से किसान अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। ग्राइंट डायरेक्टर (फसल) डॉ. सुरेश कुमार ने सीपी बिजनेस तकनीकी के बारे में बताया हुए कहा कि भविष्य में लेबर और पानी की विपन्न समस्या को देखते हुए सीपी बिजनेस एक उपयुक्त तकनीक है, जिससे पानी और लेबर दोनों की बचत होती है। कार्यशाला में ओमन और यू.एन. ओमन संस्थान के विशेषज्ञों ने भी भाग लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	15-5-23	2	5

मई की शुरुआत में हुई बारिश किसानों की कर गई बचत

हिसार। मई महीने की शुरुआत में हुई बारिश और तापमान कम रहने से किसानों को काफी फायदा हुआ है। यह बारिश मूंग, उड़द, सब्जी व फलों के लिए फायदेमंद साबित होगी। इस बारिश से धान और कपास की खेती में भी मदद मिलेगी

हिसार स्थित हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. टीपी मलिक

**मूंग, उड़द, के साथ धान
और कपास की खेती में भी
किसानों को मिलेगी मदद**



बताते हैं कि मई में भिंडी व कद्दू, वर्गीय सब्जी का फल तोड़ा जाता है। उस वक्त फसल को सप्ताह में कम से कम एक बार पानी की जरूरत होती

है। ऐसे में मई की बारिश से किसानों को सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इसके अलावा नींबू वर्गीय फलों के लिए भी यह बारिश फायदेमंद रहेगी। बारिश से बागवानी में सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ेगी।

हकृवि के दलहन विभाग से सेवानिवृत्त डॉ. मेहर सिंह का कहना है कि अप्रैल में गेहूं की फसल कटने के बाद अगली बिजाई के लिए खेत की सिंचाई जरूरी होती है। ऐसे में मई की बारिश किसानों के लिए राहत भरी होती है। सब्जी की फसल को पर्याप्त सिंचाई मिलने से किसानों की बचत होगी। बागवानी में भी इस वक्त की बारिश का कोई नुकसान नहीं होता। जिन किसानों को धान की बिजाई करनी है वे मई की बारिश के बाद किसान खेत की जुताई कर देते हैं, जिससे खरपतवार के अलावा फसल को नुकसान पहुंचने वाले कीड़े भी मर जाते हैं। ब्यूरो



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर 3 जाला	15-5-23	2	1-4

धान-सब्जी की फसल खराब कर रहे निमेटोइस, पॉली हाउस में भी कुप्रभाव

जिस धान के खेत में पिछली बार निमेटोइस थे, इस बार उस खेत में धान की बिजाई न करें

उदयभान त्रिपाठी

हिसार। पादप सूत्र कृमि (निमेटोइस) की वजह से हर साल बड़ी संख्या में धान व सब्जी की खेती खराब हो जाती है। इससे बचने के लिए किसानों को हर साल गर्मी के दिनों में दो से तीन गहरी जुताई करनी चाहिए। 10-10 दिन के अंतराल में मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने पर कृमि सूख जाते हैं। इसके अलावा फसल चक्र अपनाकर भी इस निमेटोइस की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। जिन खेतों में पिछले साल निमेटोइस के कारण फसल प्रभावित हुई थी, उसमें इस बार धान न लगाएं और मिट्टी की जांच जरूर कराएं।

निमेटोइस लंबे धागेनुमा पादप परजीवी होते हैं, जो पौधों की जड़ से चिपककर अपने लिए भोजन प्राप्त करते हैं। इनकी वजह से पौधों की वृद्धि रुक जाती है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) हिसार के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि पादप सूत्रकृमि बहुत ही छोटे-छोटे सांपनुमा कीड़े होते हैं जोकि पौधों की जड़ों में घुसकर नुकसान पहुंचाते हैं। किसान कुछ बातों का ध्यान रखा जाए तो खरीफ फसलों व पॉली हाउस में आसानी से पादप सूत्रकृमि का प्रबंधन किया जा सकता है। इस समय खरीफ फसलों में कपास, धान व पॉली हाउस में पादप सूत्रकृमि प्रबंधन के लिए खेतों की गहरी जुताई करें। अगर संभव हो तो सात से दस दिन के अंतराल पर दो-तीन बार जुताई करें, जिससे कि गर्मी के कारण सूत्रकृमि के अंडे व लारवा मर जाए व उनकी संख्या कम हो सके।

मई-जून में मिट्टी पलटने वाले हल से 3 बार गहरी जुताई करें, फसल चक्र जरूर अपनाएं



हिसार में पादप सूत्र कृमि से बचाव के लिए गहरी जुताई आवश्यक। फाइल फोटो

बीज उपचार व मिट्टी की जांच भी कराएं

कपास के बीज को इस सूत्रकृमि से निपटने के लिए ग्लुकोनएसीटोबैक्टर इइजोट्रोफिकस स्ट्रेन 35-47 बायोटिका को 50 मि-ली. प्रति एकड़ बीज की दर से बीज उपचार करें। इन बीजों को छाया में सूखाकर बिजाई करें। ये सभी नवीनतम तकनीकें अपनाकर पादप सूत्रकृमि से होने वाले नुकसान को बचा सकते हैं। फसलों, नया बाग, पॉलीहाउस लगाने से पहले खेत की मिट्टी की सूत्रकृमि हेतु जांच चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विज्ञान विभाग से करवाएं।

पॉली हाउस में दो-तीन बार गहरी जुताई के बाद नई फसल बोएं

हकृवि के नेमेटोलॉजी विभाग के हेड डॉ. अनिल वत्स ने बताया कि मई-जून में एक बार पॉली हाउस को पूरी तरह से खाली कर उसकी पूरी सफाई करें। पिछली फसल के अवशेषों को बाहर निकाल दें व अंदर की दो-तीन बार गहरी जुताई करें। पॉली हाउस में गहरी जुताई करने के बाद हल्की सिंचाई देकर 25 माइक्रोन मोटी पारदर्शी पॉलिथीन शीट से 30 दिनों तक ढक कर रखें, जिससे कि जड़-गांठ सूत्रकृमि की संख्या में कमी की जा सकती है। पॉली हाउस में फसल बदलकर लगाएं। बार-बार टमाटर व खीरा उगाने की बजाय दूसरी फसलें जैसे फूल व शिमला मिर्च आदि उगाएं। पॉली हाउस में स्वस्थ नर्सरी का प्रयोग करें।

पादप सूत्रकृमि वैज्ञानिक डॉ. सरदुल मान ने बताया कि धान की फसल में जड़-गांठ सूत्रकृमि प्रबंधन के लिए बिजाई से पहले खेत की हल्की सिंचाई देकर पारदर्शी पॉलिथीन शीट 25 माइक्रोन मोटाई से इस समय 15 दिनों के लिए ढककर किनारों को अच्छी तरह चायु अवरुद्ध कर दें। पिछले वर्ष जिन किसानों के खेत में धान में जड़-गांठ सूत्रकृमि की समस्या रही हो तो वे इस साल धान की फसल न लेकर खरीफ की कोई भी अन्य दूसरी फसल कपास, ज्वार, ग्वार, बाजरा, मूंग आदि उगाएं। अगर सारे खेत में सूत्रकृमि की समस्या है तो दो-तीन वर्ष तक फसल चक्र बदल लें। खेत एवं नर्सरी को खरपतवारों से मुक्त रखें। क्योंकि यह सूत्रकृमि बहुत से खरपतवारों पर भी पनपता है। कपास जड़-गांठ सूत्रकृमि प्रबंधन के लिए भी खेतों की गहरी जुताई करें व फसल चक्र बदल लें। कपास की जगह खरीफ की कोई भी दूसरी फसल लें।